उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर (IASE)

Name – Dr. Nishi Bhambari
Class – B.Ed
Subject - Learning and Teaching
Paper – I
Unit – 1
Topic – Terms of Exclusion and Inclusion and its impact.

Exclusion (अपवर्जन) – पृष्ठभूमि –

- भारतीय समाज में अपवर्जन विभिन्न रूप में परिलक्षित होता रहा है। जैसे–भारतीय समाज में पहले जातिगत भेदभाव, निम्न/उच्च जाति वर्ग में विभेद किया जाता था। मंदिर प्रवेश, वेद पुराण अध्ययन आदि निषेध। जिसे हम प्रत्यक्ष अपवर्जन (Direct Exlusion) कह सकते हैं।
- विद्यालयों के संदर्भ में भी अपवर्जन की भावना परिलक्षित होती रही है। जैसे–यदि शिक्षकों में यह धारणा हो जाए कि जातिगत भेदभाव के कारण निम्न जाति के बच्चे रूचि नहीं लेते, जल्दी सीख नही पाते एवं कुछ के प्रति यह धारणा रहे कि बच्चे रूचि लेते हैं, जल्दी सीखते हैं। यह भेदभाव पूर्ण व्यवहार भी अपवर्जन (Exlusion) होगा।
- क्योंकि शालाओं में वर्तमान में समस्त बच्चों के लिए समान अवसर होने पर भी भेदभावपूर्ण व्यवहार होने पर अवसर की समानता समाप्त होने लगती है। जो अपवर्जन होगा।
- आर्थिक स्थिति में श्रेणीकरण, लैंगिक संवेदनशीलता का अभाव, पूर्वाग्रह, कमजोर वंचित वर्ग प्रवेश वर्जित हो तो भी अपवर्जन होगा।

Exclusion (अपवर्जन) – अवधारणा

ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी व्यक्ति का व्यक्तियों के समूह को मुख्यधारा से निकालकर सीमान्त (मार्जिन) पर पहुंचा दिया जाता है। जिनमें व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह पूर्ण समावेशन से पृथक हो जाते हैं। जैसे– व्यक्ति का शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, आवास आदि से वंचित होना। प्रायः लिंग, धर्म, जातियता, भाषा एवं निःशक्तता के कारण अपवर्जन होता है।

शिक्षा प्रणाली में अपवर्जन (Exlustion)

1. **जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं से निषेध जो बच्चे की सीखने/शिक्षा के लिए आवश्यक है।**

   जैसे – बच्चों को यदि स्वास्थ्य सुविधाएं, घर, भोजन, कपड़ा, सुरक्षा जैसे सुविधाएं अप्राप्त होगी तो वह शिक्षा ग्रहण करने से तो वंचित रहेगा।

2. **स्कूल में प्रवेश नहीं ले पाना (Exclusion from Admission into School) –** अभिभावकों की आर्थिक स्थिति कमजोर, फीस देने में असमर्थ प्रवेश लेने के लिए निर्धारित नार्म्स का पूरा नहीं कर पाने के कारण स्कूल में प्रवेश से बच्चे वंचित रहेंगे।

3. **शालाओं के शैक्षिक कार्यक्रमों में नियमित और सतत रूप से सहभागिता नहीं करने के कारण अपवर्जन होना –**

   बच्चों की शाला में नियमित उपस्थिति नहीं, माता–पिता के दूसरे शहरों में पलायन करने के कारण बच्चों की उपस्थिति नहीं हो पाती, घर/कृषि के अन्य कार्यों में संलग्न रहने के कारण, शारीरिक, अस्वस्थता आदि कारणों से शाला में शैक्षिक कार्यक्रम में उन बच्चों का Exclusion होता है।

4. **शालाओं में कक्षा शिक्षण प्रक्रिया का बच्चों के स्तर के अनुकूल, रूचिकर, नवाचारी प्रयोग आदि नहीं होने की स्थिति में Exclusion अपवर्जन।**

   शिक्षण अधिगम प्रक्रिया – बच्चों की अधिगम शैली के अनुरूप नहीं होने पर उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती, अधिगम संसाधनों का उचित प्रयोग नहीं किया जाता, शालाओं में संसाधनों की कमी, शालाओं में कभी–कभी जातिगत, लिंग एवं अन्य कारणों से भेदभाव होना, पक्षपात पूर्ण व्यवहार, बच्चों से आपस में एक दूसरे के साथ गलत व्यवहार आदि नकारात्मक कारणों से बच्चों का अपवर्जन होना।

5. **समाज/समुदाय के विकास में वर्तमान शैक्षिक कार्यक्रम का योगदान नहीं होने की स्थिति में अपवर्जन–**

   शालाओं में शैक्षिक पाठ्यक्रम/अधिगम अनुभव का उपयोग बच्चे नहीं कर पाते, सैद्धांतिक ज्ञान की प्रधानता, कौशल युक्त समाज उपयोगी कार्य/ व्यवसायिक कौशल आदि की कमी अधिगम अनुभव का सीमित उपयोग ही हो पाता है।

6. निःशक्तता की स्थिति में अपवर्जन –

- शारीरिक रूप से निःशक्तता
- Learning difficulties (Learning)
- मनसिक निःशक्तता

विभिनन निःशक्तता के कारण बच्चों का शाला में प्रवेश वर्जित हो जाता है। भेदभाव के कारण विशेष शालाओं में प्रवेश लेना दिव्यांग बच्चों के लिए शालाओं में भौतिक संसाधानों, अधिगम संसाधनों का अभाव होता है। शिक्षक भी प्रशिक्षित नहीं होते। बच्चों/शिक्षकों का दिव्यांग बच्चों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार आदि कारणों से निःशक्त बच्चों का अपवर्जन होता है।

Causes of Impact of Exclusion (अपजर्वन के कारण एवं प्रभाव)

1. शालाओं में दर्ज संख्या (Enrollment) में भिन्नता – ग्रामीण एवं शहरी शालाओं में अपवर्जन के कारण दर्ज संख्या में अंतर आ जाता है। यदि बच्चों का प्रवेश से वंचित रखा जाए।
2. **कमजोर/वंचित वर्ग के बच्चों को जो शैक्षिक सुविधाओं से** अपवर्जन के कारण वंचित रहते हैं। शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ नहीं पाते हैं।
3. **निःशक्तता के कारण अपवर्जन –** दिव्यांग बच्चे शालाओं में स्वयं के साथ प्रतिकूल व्यवहार होने के कारण शैक्षिक सुविधाओं से वंचित हो जाते हैं। शाला में प्रवेश होने के बाद भी उनको अपवर्जन का सामना करना पड़ता है।
4. **Gender inequality (लिंग असमानता) –** समाज में लिंग असमानता के कारण लिंग विभेदीकरण (Gender discriminality) होता है। परस्पर और अपवर्जन का सामना करना पड़ता है। शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर प्राप्त नहीं हो पाता।
5. **शिक्षकों का प्रतिरोधात्मक व्यवहार –** शाला में शिक्षकों का व्यवहार – बच्चों के अनुकूल यदि नहीं होता और वे प्रतिरोध करें तो भी बच्चों में अपवर्जन होता है।
6. **शाला में मित्रों के द्वारा सहयोग नहीं करना –** शाला/कक्षा में दोस्तों के द्वारा उचित व्यवहार नहीं करना, अपमान करना, तिरस्कृत करना, नीचा दिखाना, उपेक्षा या

दुर्व्यवहार करना, हंसी उड़ाना आदि असहयोगात्मक व्यवहार बच्चें का शाला से अपवर्जन का भी कारण बनता है।

7. **शाला/कक्षा/समाज में योग्यता के अनुरूप उचित अवसर का न मिलना –** बच्चों को उनकी योग्यता के अनुसार अभिव्यक्ति का कार्य करने, शिक्षा प्राप्त करने का, शिक्षा के रूपों में भिन्नता आदि का अवसर प्राप्त न होने पर बच्चों में अपवर्जन होता है।
8. **आवश्यक संसाधनों की सुविधा न मिलना –** समाज/शाला में क्षमता अनुरूप कार्य करने के लिए यदि उचित संसाधन बच्चों को प्राप्त नहीं होते तो भी उनमें अपवर्जन होता है।

   जाति/रंग/धर्म/शैक्षिक स्थिति/व्यवसायिक स्थिति/नौकरी/रहन–सहन/भेदभाव आदि भी अपवर्जन के कारण होते है।

9. **सामाजिक अपवर्जन (Social Exclusion)-**

   उपरोक्त कई कारणों से जब व्यक्ति पूरी तरह से या समूह से निष्कासित हो जाता है तथा समाज की मुख्यधारा से निकालकर सीमान्त (मार्जिन) तक पहुंचा दिया जाता है, तो हम कह सकते हैं कि उसका सामाजिक अपवर्जन (Social Exclusion) हुआ है।

   उन रीतियों को संदर्भित करता है, जिनमें व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह विस्तृत समाज में पूर्ण समावेशन से पृथक हो जाते हैं। यह व्यक्ति या व्यक्तियों के समूहों को शिक्षा, भोजन, अनिवार्य वस्तुओं, स्वास्थ्य, परिवहन, आवास आदि से वंचित हो जाते हैं।

<u>उदाहरण –</u>

पहली अवस्था – Exclusion from Mainstream-

एक बच्चा जिसमें learning difficulties के लक्षण हैं। सामान्य बच्चों से कुछ अलग व्यवहार करता है। उसका कथन है कि मेरे भी समान अधिकार है, मुझे अन्य की तरह समान अवसर मिले, मेरे भी जीवन के अनुभव ऐसे है, जो सामान्य बच्चों को मिलते हैं तो मुझे भी सामान्य बच्चों के साथ स्कूल में पढ़ना है। पिता के द्वारा भी बच्चे की शिक्षा के लिए मनोचिकित्सक एवं शिक्षा अधिकारियों एवं प्रशासकों आदि से अत्यंत प्रयास के बाद

शाला में प्रवेश प्राप्त करने की अनुमति प्राप्त की तत्पश्चात् बच्चे को शाला में प्रवेश मिला। सामान्य बच्चों के साथ शाला में प्रवेश से पूर्व बच्चा शैक्षिक अपवर्जन (Educational Ex lusion) की स्थिति में था।

दूसरी स्थिति (Exclusion in Mainstream School) –

बच्चों को शाला में प्रवेश तो मिला, परन्तु वहां उसके साथ अन्य बच्चों एवं शिक्षक का व्यवहार, उसके प्रति प्रतिकूल था। किसी भी शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता नहीं ली जाती थी। इन परिस्थितियों में बच्चा तनावग्रस्त हो गया, स्वयं को अकेला महसूस करने लगा, उसने स्कूल छोड़ दिया। शाला में रहकर भी उसके साथ Exclusion अपवर्जन हुआ।

आंकलन –

1. Social Exclusion (सामाजिक अपवर्जन) के समय बच्चों की मानसिक स्थिति कैसी होती है।
2. विद्यालय में Exclusion (अपवर्जन) के उदाहरण प्रस्तुत करें।

Inclusion (समावेशन) : अवधारणा

- शिक्षा का समावेशीकरण का आशय कि शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामान्य एवं विभिन्न प्रकार की योग्यताएं रखने वाले बच्चों को, एक समान एक साथ शिक्षा दी जाती है।
- समावेशी एक ऐसी अवधारणा है, जिसमें समाज के सभी वर्गों की शिक्षा ग्रहण करने में अवसरों को समानता प्रदान करना तथा शिक्षा एवं कौशल के लिए बच्चों को सशक्त करना होता है, अर्थात अवसरों की समानता के साथ बच्चों के विकास को बढ़ावा देना है।
- समावेशन के अंतर्गत बिना भेदभाव के सभी वर्ग के बच्चों को (सामान्य, निःशक्त, वंचित वर्ग, सभी जाति, धर्म, लिंग, आर्थिक विभेद) सामान्य बच्चों की तरह शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार है।

- समावेशी शिक्षा के अंतर्गत बच्चों की शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं को पहचान कर उनकी अवस्थाओं को स्वीकार कर उनको समुचित विकास के अवसर प्रदान किए जाते हैं।

उदाहरण –

पहली स्थिति – एक निःशक्त बच्चे का कथन – मैं पहले जिस स्कूल में था, वहां मेरे साथी एवं शिक्षक मुझसे अनुकूल व्यवहार नहीं करते थे, यही प्रतिकूल व्यवहार मेरे स्कूल छोड़ने का कारण बना।

दूसरी स्थिति – बच्चे का कथन – बच्चे के द्वारा जिस स्कूल में प्रवेश लिया गया, वहां बच्चों और शिक्षकों का व्यवहार बहुत ही सहयोगात्मक था, मेरे दोस्त बन गए, कक्षा में सहभागिता होने लगी, मित्रवत व्यवहार, शिक्षक एवं बच्चों के मध्य पाया गया। विद्यालय में समस्त गतिविधियों में सहभागिता का अवसर मिलने लगा एवं शाला में बने रहने हेतु अनुकूल परिस्थितियां बनी।

उपरोक्त दूसरी परिस्थिति समावेशन को दर्शाता है।

Impact of Inclusion (समावेशी शिक्षा का प्रभाव) –

- समावेशी शिक्षा के माध्यम से समावेशन (Inclusion) का प्रभाव सकारात्मक होता है।
- इसमें शिक्षक, बच्चें एवं विद्यालय में प्रशासक एवं अन्य कर्मचारियों में सहयोग एवं एकता से अनुकूल परिस्थितियां बनती है, जिनसे शैक्षिक उन्नति होती है।
- इसमें सामान्य, दिव्यांग बच्चों के मध्य सहयोग की भावना आती है, एकीकरण होता है। समानता के सिद्धांत का अनुपालन होता है।
- इस शिक्षण व्यवस्था में दिव्यांग बच्चों में प्रेम, दयालुता, समायोजन, सहायता एवं भाईचारा आदि जैसे सामाजिक गुणों का भी विकास होता है।
- समावेशी शिक्षा व्यवसस्था में दिव्यांग बच्चे एवं अन्य वंचित वर्ग के बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ मानसिक रूप से प्रगति करने का अवसर प्राप्त होता है।

- समावेशी शिक्षा व्यवस्था में धर्म, लिंग, जाति, निःशक्तता आदि के विभेद के बिना सहसंबंधित एवं समायोजित रूप में रहकर बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं।
- वैयक्ति विभिन्नताओं के फलस्वरूप समावेशी शिक्षा व्यवस्था का अधिक महत्व है।
- कुंठा तथा तनाव को समाप्त करने के लिए समावेशी शिक्षा व्यवस्था अधिक महत्व रखती है।
- समस्यात्मक बच्चे बनने से रोकने में समावेशी शिक्षा व्यवस्था आवश्यक है।
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार बच्चों को समावेशी शिक्षा प्रदान की जाती है।
- समावेशी शिक्षा का मुख्य सिद्धांत भेदभाव रहित शिक्षा है।
- समावेशी शिक्षा व्यवस्था में दिव्यांग, सीखने में मंदबुद्धि, मौखिक संचार में भिन्नता, अधिगम कठिनाईयां वाले बच्चों की पहचान कर उनके लिए विशिष्ट कार्यक्रम बनाए जाते हैं। विभिन्न सहायक प्रविधियां उपलब्ध कराई जाती है।
- शारीरिक रूप से भिन्नता वाले बच्चों की पहचान कर उनकी चिकित्सा के साथ–साथ शिक्षा प्रदान की जाती है।
- असुविधा युक्त/वंचित बच्चे तथा सांस्कृतिक रूप से अल्पसंख्यक बच्चों को पहचान कर उनको भी व्यवस्था उपलब्ध कराई जाती है।
- संवेगात्मक रूप से परेशान बच्चों को भी शिक्षण व्यवस्था आवश्यकतानुसार की जाती है।
- समावेशी शिक्षा नीति के अंतर्गत सामान्य शिक्षा संस्थाओं में विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रमों को उपयोग करने के लिए संसाधन एजेंसी के रूप में सभी के लिए सेवाएं उपलब्ध करना शामिल होता है।
- समावेशन में शाला एक समुदाय के रूप में होती है, विशेष आवश्यकता वाला बच्चा भी एक सदस्य होता है। पूरा समुदाय एक साथ सीखता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे विशेष विद्यालयों में नहीं भेजे जाते, अतः समावेशी शालाओं में बच्चों को भेजना उपयोगी है।

- शिक्षा की सार्वभौमिकता हेतु उपयोगी है।
- संवैधानिक उत्तरदायित्व का निर्वहन होता है।

आंकलन –

1. समावेशन एवं अपवर्जन में भिन्नता को उदाहरण द्वारा व्यक्त करें।
2. समावेशी शिक्षा की अवधावरणा एवं महत्व को समझाइये।